६. स्वतंत्रता आंदोलन युग का प्रारंभ

अंग्रेजी शिक्षा के भारतीय समाज जीवन पर मिले-जुले परिणाम हुए । नवशिक्षित समाज ने जिस पुनर्जागरण का प्रारंभ किया; उससे राष्ट्रीयता की भावना का बीजारोपण हुआ । भारत के अलग-अलग प्रदेशों में चलने वाले आंदोलनों के कारण विभिन्न प्रांतों में राजनीतिक संस्थाओं का एक सूत्रीकरण करने, राजनीतिक रूप से जागृत हुए विभिन्न दलों और लोगों को इकट्ठा करने और राष्ट्रीय हितों की समस्याओं की ओर लोगों का ध्यान आकृष्ट कर राष्ट्रीय आकांक्षाओं को व्यक्त करने के लिए संपूर्ण भारतीय स्तर पर एक राजनीतिक संगठन खड़ा करने की आवश्यकता थी और उसके लिए अनुकूल स्थिति का निर्माण भी हुआ था ।

शासनकाल नक ीकरण : अंग्रेजी प्रशासन के कारण भारत में सही अर्थ में एकछत्र शासन प्रारंभ हुआ । संपूर्ण देश में समान नीति, विधि शासन के सम्मुख सभी एक समान जैसी बातों के कारण लोगों में एक राष्ट्रीयता की भावना विकसित हुई । अंग्रेजों ने अपनी प्रशासनिक सुविधाओं के लिए और सेना की वेगवान गतिविधियों के लिए रेल-सड़कों का जाल बिछाया परंतु इन भौतिक सुविधाओं का लाभ भारतीयों को भी प्राप्त हुआ । भारत के अलग-अलग प्रांतों के लोगों का पारस्परिक संबंध बढ़ा और उनके बीच संवाद में वृद्धि हुई । साथ ही; राष्ट्रभावना बढ़ने लगी ।

आन शोषण : भारत की संपत्ति का प्रवाह कई स्रोतों से इंग्लैंड की ओर बहने लगा । इंग्लैंड की साम्राज्यवादी नीति के कारण भारत का आर्थिक शोषण होने लगा । किसानों को बलपूर्वक नकदी अथवा व्यापारिक फसलें लेने के लिए बाध्य करना, लगान का बोझ, निरंतर आने वाला अकाल जैसे कारणों से भारतीय किसान की रीढ़ की हड्डी टूट गई थी । पारंपरिक उद्योग-धंधों का ह्रास होने से बेरोजगारी बढ़ गई । पूँजीपतियों द्वारा श्रमिक वर्ग का शोषण हो रहा था । मध्य वर्ग पर नये-नये कर लादे जा रहे थे । परिणामस्वरूप लोगों के मन में असंतोष धधक रहा था ।

नश ा : पश्चिमी शिक्षा के प्रसार-प्रचार के कारण न्याय, स्वतंत्रता, समता और लोकतंत्र जैसी नई संकल्पनाओं से भारतीयों का परिचय हुआ । भारतीयों ने बुद्धिवादिता, विज्ञाननिष्ठा, मानवता, राष्ट्रवाद जैसे मूल्यों को आत्मसात किया । फलतः हमारे देश का शासन चलाने में हम सक्षम हैं तथा इन मूल्यों के आधार पर हमारे देश की उन्नति साध्य करनी चाहिए, यह भावना बलवती होने लगी । भाषाई विविधता से संपन्न ऐसे भारत को अंग्रेजी भाषा के कारण संपर्क का एक नया माध्यम मिला ।

भारत के ीन इनत्हास का न : कोलकाता में अंग्रेजों ने 'एशियाटिक सोसाईटी' की स्थापना की । कई भारतीय और पश्चिमी विद्वानों ने भारतीय संस्कृति का अध्ययन प्रारंभ किया । संस्कृत, फारसी और अन्य भारतीय भाषाओं में उपलब्ध पांडुलिपियों की जाँच-पड़ताल कर उनपर शोधकार्य प्रकाशित किए । डॉ. भाऊ दाजी लाड, डॉ.रा.गो. भांडारकर जैसे कुछ भारतीय विद्वानों ने प्राचीन भारतीय संस्कृति का गहन अध्ययन किया । हमें प्राचीन और संपन्न विरासत प्राप्त है, इसका बोध होने से भारतीयों में अस्मिता जागृत हुई । पुणे में 'भांडारकर प्राच्यविद्या संशोधन मंदिर' संस्था विगत सौ वर्षों से कार्यरत है ।

डॉ.भाऊ दाजी लाड

डॉ. रा.गो. भांडारकर

समाचारपत्रों का कार : इसी समय अंग्रेजी और प्रादेशिक भाषाओं में पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित होने लगीं । इन समाचारपत्रों द्‌वारा राजनीतिक-सामाजिक जागृति होने लगी । दर्पण, प्रभाकर, हिंदू, अमृत बाजार पत्रिका, केसरी, मराठा जैसे समाचारपत्रों द्‌वारा सरकारी नीतियों की आलोचना होने लगी ।

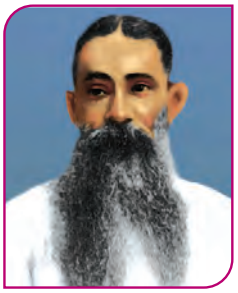

व्योमेशचंद्र बनर्जी

भारतीर राष्टीर ेस की था पना : २८ दिसंबर १८८५ ई. को मुंबई की गोकुलदास तेजपाल संस्कृत पाठशाला में राष्ट्रीय कांग्रेस का प्रथम अधिवेशन का आयोजन किया गया । इस अधिवेशन में भारत के विभिन्न प्रांतों के ७२ प्रतिनिधि उपस्थित थे । कोलकाता के विख्यात वकील व्योमेशचंद्र बनर्जी इस अधिवेशन के अध्यक्ष थे । इन सब ने मिलकर इस सभा में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (इंडियन नैशनल काँग्रेस) की स्थापना की । अंग्रेज अधिकारी एलन ओक्टेवियन ह्‌यूम भी राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना में अग्रसर थे । प्रशासन में भारतीयों को अधिक प्रतिनिधित्व मिले, अंग्रेज सरकार सेना व्यय में कटौती करे जैसी माँगों का निवेदन सरकार को दिया गया ।

राष्टीर ेस के उद्‌देर : भारत के विभिन्न भागों के लोगों को धर्म, वंश, जाति, भाषा, भौगोलिक प्रदेश आदि का भेदभाव भुलाकर एक मंच पर लाना, एक-दूसरे की समस्याओं को समझ-बूझकर उनपर विचार-विमर्श करना, लोगों में एकता की भावना में वृद्‌धि लाना, राष्ट्र की उन्नति के लिए प्रयास करना आदि राष्ट्रीय कांग्रेस के उद्‌देश्य थे ।

नरम दि का कालि ड (१८८५ ई. से १९०५ ई. तक) : राष्ट्रीय सभा की स्थापना के पश्चात प्रारंभ के दशक में उसका कार्य धीमी गति से परंतु निरंतरता के साथ चलता रहा । राष्ट्रीय कांग्रेस के नेता यथार्थवादी और उच्च शिक्षित थे । उनका मानना था कि संगठन का निर्माण सुदृढ़ नींव पर होना चाहिए । उनपर पश्चिमी बुद्‌धिजीवियों के उदारमतवादी सिद्‌धांतों का तथा स्वतंत्रता, समता, बंधुता जैसे मूल्यों का प्रभाव था । उन्हें विधि अथवा कानून के मार्ग पर चलने में विश्वास था । वे आशा करते थे कि कानून अथवा विधि के मार्ग पर चलकर माँगें रखने से अंग्रेज हमारी माँगों के साथ न्याय करेंगे । गोपाल कृष्ण गोखले, फिरोज शाह मेहता, सुरेंद्रनाथ बनर्जी नरम दल के नेता थे ।

प्रांतीय विधि मंडल में जनप्रतिनिधि हों; शिक्षित भारतीयों को नौकरियाँ मिलें, बढ़ते सैनिकी व्यय में कटौती हो, लोगों के कानूनी अधिकारों की रक्षा हो सके; इसके लिए कार्यपालिका और न्यायपालिका को अलग-अलग किया जाए जैसे विभिन्न प्रस्ताव राष्ट्रीय कांग्रेस के नेताओं ने अधिवेशन में रखे ।

राष्ट्रीय आंदोलन में फूट डालने के लिए आगे चलकर अंग्रेजों ने 'फूट डालो और राज करो' नीति का अवलंब किया ।

गरम दि का कालि ड (१९०५ ई.-१९२० ई.) : भारत के सभी नेता जो राजनीतिक दृष्टि से जागरूक थे; जाति, धर्म, भाषा और प्रांत को परे रखकर राष्ट्रीय कांग्रेस के मंच पर इकट्‌ठे आ रहे थे । राष्ट्रीय कांग्रेस के उद्‌देश्यों और कानूनी ढंग से आंदोलन आगे ले जाने पर उनमें एकमत था । फिर भी इन नेताओं के बीच आंदोलन की कार्य पद्‌धति को लेकर मतभेद थे । ये मतभेद सैद्‌धांतिक स्वरूप के थे । राजनीतिक आंदोलन में उत्पन्न हुए इन मतभेदों के आधार पर दो प्रमुख राजनीतिक दल बन गए । शांतिपूर्वक और कानूनी मार्ग का अनुसरण करने वाले नेता नरम पंथी माने गए और स्वतंत्रता के लिए प्रखर संघर्ष करना चाहिए; यह मानने वाले गरम पंथी नेता कहलाए। लाला लजपतराय, बाल गंगाधर तिलक और बिपिनचंद्र पाल गरम पंथी नेता माने जाते थे ।

लोकमान्य तिलक

प्रारंभिक समय में गरम पंथी नेताओं ने भारतीयों में राजनीतिक जागृति उत्पन्न करने के लिए समाचारपत्रों,

राष्ट्रीय पर्वों और राष्ट्रीय शिक्षा जैसे मार्गों का अवलंब किया । लोकमान्य तिलक ने 'केसरी' और 'मराठा' समाचारपत्रों द्‌वारा सरकार की कटु आलोचना की । बंगाल प्रांत में 'अमृत बाजार पत्रिका' गरम पंथी विचारों का मुखपत्र थी । पारस्परिक मतभेद भुलाकर लोग इकट्‌ठे आएँ, उनके बीच विचारों का आदान-प्रदान हो तथा राष्ट्रपुरुषों के कार्यों द्‌वारा साधारण लोगों को प्रेरणा मिले; इस उद्‌देश्य को लेकर लोकमान्य तिलक ने शिवजयंती तथा गणेशोत्सव पर्वों का आयोजन कराया । उनका विचार था कि यदि राजनीतिक उद्‌देश्य को लेकर लोग इकट्‌ठे आएँ तो सरकार उनपर प्रतिबंध लगाएगी । परंतु धार्मिक उद्‌देश्य को लेकर लोग इकट्‌ठे आएँ तो सरकार उनपर प्रतिबंध लगा नहीं पाएगी । तिलक ने मंडाले के कारागृह में 'गीतारहस्य' ग्रंथ लिखा । इस ग्रंथ का सारतत्व कर्मयोग है और लोग भी कर्मशील बने रहें; इसपर उन्होंने बल दिया । अपनी भाषा, अपनी संस्कृति के प्रति प्रेम, आस्था रखने वाली पीढ़ी का निर्माण हो; इसलिए गरम पंथी नेताओं ने शिक्षा संस्थान स्थापित किए । गरम पंथी नेताओं का मानना था कि यदि लाखों-करोड़ों लोग स्वतंत्रता युद्‌ध में सम्मिलित होकर सरकार को चुनौती देते हैं और उनसे संघर्ष करते हैं, तभी सफलता मिलेगी । आंदोलन को अधिक प्रखर बनाना चाहिए; इसपर उन सभी का एक मत था । परंतु उन्होंने आग्रहपूर्वक प्रतिपादित किया कि इसके लिए सशस्त्र विद्रोह की भूमिका न लेते हुए व्यापक जनआंदोलन खड़ा करना चाहिए । नरम पंथी नेताओं ने आंदोलन की नींव रखी और गरम पंथी नेताओं ने इस आंदोलन को आगे बढ़ाया ।

१८९७ ई. में पुणे में प्लेग की महामारी ने हाहाकार मचाया था । सैकड़ों लोग मृत्यु को प्राप्त हुए थे । इस महामारी पर नियंत्रण पाने के लिए रैंड नामक अधिकारी की नियुक्ति की गई थी । प्लेग के रोगियों को खोज निकालने के लिए उसने तलाशी लेने का अभियान प्रारंभ किया गया । लोगों पर अन्याय-अत्याचार किए गए । इसका प्रतिशोध लेने के लिए चाफेकर भाइयों ने उसकी हत्या की । सरकार ने तिलक के साथ इस षडयंत्र का संबंध जोड़ने का जी-तोड़ प्रयास किया परंतु इसमें सफल न होने पर भी सरकार ने बदले की भावना से लोकमान्य तिलक को कारावास में किया ।

बंगाल का विभाजन : हिंदू-मुस्लिम समाज में फूट का बीज बोकर, 'फूट डालो और राज करो' नीति का अवलंब करना अंग्रेजों ने निश्चित किया । तत्कालीन वायसराय लॉर्ड कर्जन ने आग में घी का काम लिया । बंगाल एक विशाल प्रांत था । इस प्रांत का शासन चलाना प्रशासनिक दृष्टि से कठिन होने का कारण बताकर लॉर्ड कर्जन ने १९०५ ई. में बंगाल के विभाजन की घोषणा की । इस विभाजन के अनुसार मुस्लिम बहुलसंख्यकों का पूर्व बंगाल और हिंदू बहुलसंख्यकों का पश्चिम बंगाल बनाया गया । विभाजन के कारण हिंदू-मुस्लिमों में फूट उत्पन्न कर स्वतंत्रता आंदोलन को दुर्बल करना; इस नीति का यह छद्‌म उद्‌देश्य था ।

बंग भंग आंदोलन : केवल बंगाल में ही नहीं अपितु संपूर्ण भारत में विभाजन के विरोध में जनमत जागृत हुआ । १६ अक्तूबर विभाजन का दिन था । इसे राष्ट्रीय शोक दिवस के रूप में मनाया गया । संपूर्ण भारत में निषेध सभाओं द्‌वारा सरकार की निंदा और भर्त्सना की गई । सभी स्थानों पर 'वंदे मातरम्' गीत गाया जाने लगा । एकता के प्रतीक के रूप में रक्षाबंधन का उपक्रम आयोजित किया गया । सरकारी विद्‌यालयों, महाविद्‌यालयों का बहिष्कार कर बड़ी संख्या में विद्‌यार्थी इस आंदोलन में सम्मिलित हुए । बंग भंग आंदोलन का नेतृत्व सुरेंद्रनाथ बनर्जी, आनंद मोहन बोस, रवींद्रनाथ ठाकुर आदि ने किया । बंग भंग आंदोलन के कारण भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का दायरा और फैल गया । अब यह एक राष्ट्रीय आंदोलन बन गया । असंतोष की प्रखरता देखकर १९११ ई. में अंग्रेजों ने बंगाल का विभाजन रद्‌द कर दिया ।

राष्ट्रीय काँग्रेस की चतुःसूत्री : १९०५ ई. में हुए राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशन के अध्यक्ष नामदार गोखले थे । उन्होंने बंग भंग आंदोलन को समर्थन दिया था । १९०६ ई. में हुए अधिवेशन के अध्यक्ष दादाभाई नौरोजी थे । दादाभाई नौरोजी ने मंच से

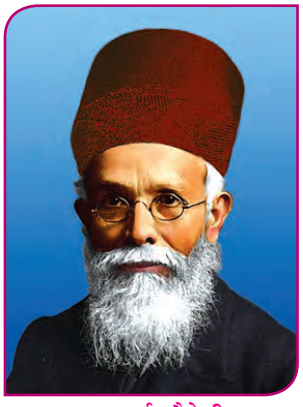

दादाभाई नौरोजी

'स्वराज्य' शब्द का पहली बार उच्चारण किया। उन्होंने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में संदेश दिया कि एकजुट रहो, जी-जान से प्रयास करो और स्वराज्य का लक्ष्य प्राप्त करो, जिससे आज जो लाखों-करोड़ों भाई निर्धनता, भुखमरी और रोगों के शिकार हो रहे हैं; उन्हें बचाया जा सकता है और विकसित राष्ट्रों में भारत को जो सम्मान का स्थान प्राप्त था; वह पुनः प्राप्त होगा। इसी अधिवेशन में स्वराज्य, स्वदेशी, राष्ट्रीय शिक्षा और बहिष्कार की चतुःसूत्री को राष्ट्रीय कांग्रेस ने एकमत से स्वीकारा। स्वदेशी आंदोलन के कारण हम स्वयंपूर्ण और आत्मनिर्भर बनेंगे, स्वदेशी के मार्ग पर चलने के लिए हमारे देश की पूँजी, संसाधन, मनुष्यश्रम और अन्य सभी साधनों को हमें एकत्रित करना होगा और इसी के द्वारा हम देश का कल्याण साध सकते हैं। विदेशी वस्तुओं और माल पर बहिष्कार डालना पहली सीढ़ी है, तो विदेशी शासन का बहिष्कार करना अगली सीढ़ी होगी। इन नेताओं का मानना था कि बहिष्कार के कारण ब्रिटिश साम्राज्य की जड़ पर ही आघात किया जा सकता है।

क्या तुम जानते हो ?

गोपाल कृष्ण गोखले

नामदार गोपाल कृष्ण गोखले ने १९०५ ई. में 'भारत सेवक समाज' की स्थापना की। लोगों में देशभक्ति की भावना निर्माण कर स्वार्थत्याग की सीख देना, धर्मों एवं जातियों के बीच के विरोध को नष्ट करना और सामाजिक सौहार्द निर्माण करना, शिक्षा का प्रचार-प्रसार करना आदि भारत सेवक समाज के मुख्य उद्देश्य थे।

गरम और नरम पंथ के बीच के मभिे : १९०७ ई. में सूरत में राष्ट्रीय कांग्रेस का अधिवेशन हुआ। इस अधिवेशन में राष्ट्रीय कांग्रेस के इन दो पंथियों के बीच के वैचारिक मतभेद पराकाष्ठा तक पहुँच गए। नरम पंथियों का प्रयास था कि स्वदेशी और बहिष्कार के प्रस्ताव को अलग रखा जाए जब कि गरम पंथियों का प्रयत्न यह था कि उनका यह प्रस्ताव सफल न होने पाए। नरम पंथी नेता ना.गोखले, सुरेंद्रनाथ बनर्जी, फिरोज शाह मेहता ने गरम पंथी नेताओं पर आरोप लगाया कि गरम पंथी नेता राष्ट्रीय कांग्रेस को अपने अधिकार और नियंत्रण में कर लेना चाहते हैं। लाला लजपतराय ने बीच-बचाव करने का प्रयास किया। तिलक का मत था कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस एक राष्ट्रीय मंच है और उसमें फूट पैदा नहीं होनी चाहिए। अधिवेशन के समय तनाव बहुत बढ़ गया और समझौता होना असंभव हो गया। अंततः भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में फूट पड़ गई।

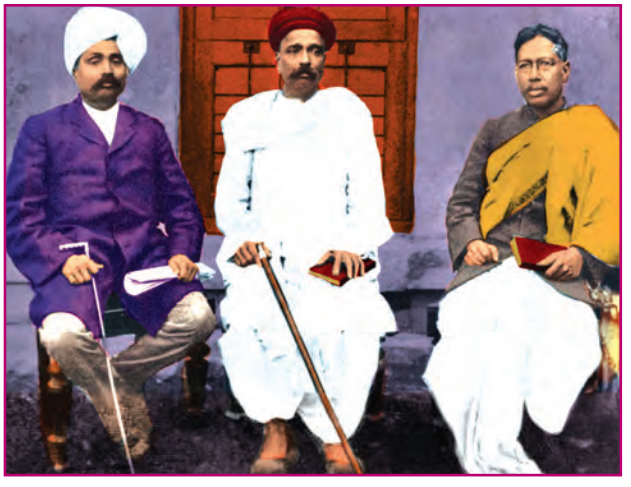

लाल-बाल-पाल

अं सरकार का मिनि : बंग भंग के पश्चात प्रारंभ हुआ प्रभावी जनआंदोलन देखकर सरकार व्यग्र और बेचैन हो उठी। इस आंदोलन की रोक-थाम करने के लिए सरकार ने दमनतंत्र का अवलंब किया। सार्वजनिक सभाओं पर कानून द्वारा प्रतिबंध लगाया गया। इस कानून की अवज्ञा करने पर कठोर दंड दिए गए। विद्यालय जाने वाले छात्रों को हंटर से पीटा गया। समाचारपत्रों पर कई प्रकार के प्रतिबंध लगाए गए। सरकार की आलोचना करने के आरोप में अनेक छापाखाने जब्त किए गए। लेखकों और संपादकों को कारावास में बंद किया गया। सरकार ने गरम पंथी नेताओं के विरुद्ध कड़ी कार्यवाही की। बंगाल में

इसकी तीखी प्रतिक्रिया दिखाई दी । क्रांतिकारियों ने गोलीबारी तथा बम हमलों का मार्ग अपनाया । इन बम हमलों का केसरी समाचार पत्र के माध्यम से समर्थन करने वाले लोकमान्य तिलक पर राजद्रोह का अभियोग लगाकर उन्हें छह वर्षों के लिए म्याँमार के मंडाले के बंदीगृह में भेजा गया । बिपिनचंद्र पाल को कारावास का दंड दिया गया और लाला लजपतराय को पंजाब से निष्कासित किया गया ।

मुस्लिम लीग की स्थापना : बंग भंग आंदोलन में राष्ट्रीय कांग्रेस को जनता का प्रचंड समर्थन मिला था । यह देखकर अंग्रेज सत्ताधीश अशांत और परेशान हो गए । अंग्रेजों ने 'फूट डालो और राज करो' नीति का पुनः अवलंब किया । अंग्रेजों ने यह कहना प्रारंभ किया कि मुस्लिमों के हितों की रक्षा करने हेतु उनका स्वतंत्र राजनीतिक संगठन होना आवश्यक है । अंग्रेज सरकार के प्रोत्साहित किए जाने से मुस्लिम समाज के उच्चवर्णियों का एक प्रतिनिधि मंडल आगा खाँ के नेतृत्व में गवर्नर लॉर्ड मिंटो से मिला । लॉर्ड मिंटो और अन्य अंग्रेज अधिकारियों के प्रेरित किए जाने से १९०६ ई. में 'मुस्लिम लीग' की स्थापना हुई ।

मोर्ले मिंटो कानून : भारतीय जनता में अंग्रेज सरकार के कामों को लेकर असंतोष था । जनता में यह भावना व्याप्त थी कि भारतीय जनता की निर्धनता का मुख्य कारण अंग्रेजों की आर्थिक नीतियाँ हैं । कर्जन की दमन नीति, पढ़े-लिखे भारतीयों को नौकरियों में समाविष्ट न कराना, भारत के बाहर अफ्रीका में भारतीयों के साथ किया जाने वाला अपमान और अन्यायपूर्ण व्यवहार आदि बातों से भी असंतोष में वृद्धि हुई । भारतीयों के इस असंतोष की अस्थायी मरहम पट्टी करने के लिए मोर्ले-मिंटो सुधार कानून १९०९ ई. में बनाया गया । इस कानून द्वारा विधि पालिका में भारतीय सदस्यों की संख्या बढ़ाई गई और कुछ निर्वाचित भारतीय प्रतिनिधियों का समावेश विधि पालिका में कराने का प्रावधान भी किया गया । इसी कानून के अनुसार मुस्लिमों के लिए स्वतंत्र निर्वाचन क्षेत्र की योजना की गई । अंग्रेजों की इस कुटिल नीति के कारण भारत में अलगाववादी प्रवृत्ति के बीज बोये गए ।

लखनऊ समझौता : १९१६ ई. में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का अधिवेशन लखनऊ में हुआ । इस अधिवेशन में तिलक के नेतृत्व में राष्ट्रीय कांग्रेस में उत्पन्न हुए मतभेद को समाप्त करने के प्रयास हुए । इसी वर्ष भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस और मुस्लिम लीग के बीच समझौता हुआ । इसे 'लखनऊ समझौता' कहते हैं । इस समझौते के अनुसार मुस्लिमों के स्वतंत्र निर्वाचन क्षेत्रों को राष्ट्रीय कांग्रेस ने मान्यता प्रदान की और भारत को राजनीतिक अधिकार प्राप्त करा देने के कार्य में राष्ट्रीय कांग्रेस को सहयोग देना मुस्लिम लीग ने स्वीकार किया ।

होमरूल आंदोलन : १९१४ ई. में तिलक मंडाले के कारावास से रिहा हुए । इस समय यूरोप में प्रथम विश्व युद्ध प्रारंभ हुआ था । इस युद्ध के सीधे परिणाम भारत को भी सहने पड़े । आवश्यकता की वस्तुओं के दाम बढ़ गए । अंग्रेज सरकार ने भारतीयों पर अनेक प्रतिबंध लगाए । परिणामतः भारतीयों में असंतोष बढ़ने लगा । इस स्थिति में डॉ.एनी बेजेंट और लोकमान्य तिलक ने होमरूल आंदोलन प्रारंभ किया । होमरूल अर्थात हम अपना शासन स्वयं चलाते हैं । इसी को स्वशासन भी कहते हैं । आयरलैंड में भी उपनिवेशवाद के विरोध में ऐसा आंदोलन प्रारंभ हुआ था । इसी आधार पर भारतीय होमरूल आंदोलन ने स्वशासन के अधिकार अंग्रेज सरकार के पास माँगे । डॉ.एनी बेजेंट और लोकमान्य तिलक ने पूरे देश में तूफानी दौरे किए और लोगों तक स्वशासन की माँग पहुँचाई । तिलक ने दृढ़तापूर्वक कहा, 'स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं उसे पाकर ही रहूँगा ।'

डॉ.एनी बेजेंट

प्रथम विश्वयुद्ध और भारत : यूरोप में युद्धजन्य स्थिति, भारतीय जनता में बढ़ता जा रहा

असंतोष, होमरूल आंदोलन की बढ़ती लोकप्रियता जैसी परिस्थिति में भारतीयों से सहयोग पाना अंग्रेजों के लिए आवश्यक था । इसलिए सुधार की अगली किश्त भारतीयों को देने से तात्पर्य भारतीयों को राजनीतिक अधिकार देने चाहिए; यह अंग्रेज सरकार ने सोचा । तब तत्कालीन भारतमंत्री मांटेग्यू ने १९१७ ई. में घोषणा की कि भारत को चरणबद्‌ध रूप में स्वशासन के अधिकार और उत्तरदायी सरकार प्रदान की जाएगी । तिलक ने भी घोषित किया कि यदि सरकार भारतीयों की माँगों के बारे में सहानुभूति और विवेकशीलता से काम लेगी तो भारतीय जनता भी सरकार को सहयोग देगी । लोकमान्य तिलक की इस नीति को 'प्रतियोगी सहकारिता' कहते हैं ।

माँटेग्यू-चेम्सफोड कानून : १९१९ ई. में ब्रिटिश पार्लियामेंट ने भारत में संवैधानिक सुधार लाने हेतु एक कानून पारित किया । इसको माँटेग्यू-चेम्सफोर्ड कानून अथवा रिपोर्ट कहते हैं । इस कानून के अनुसार गौण अथवा दोयम दर्जे के खाते भारतीय मंत्रियों को दिए गए परंतु वित्त, राजस्व, गृह मंत्रालय जैसे महत्त्वपूर्ण विभाग गवर्नर के अधिकार में थे । १९१९ ई. के कानून के अनुसार भारतीयों द्‌वारा की गई 'उत्तरदायी सरकार' की माँग को पर्याप्त मात्रा में पूर्ण नहीं किया गया था । इस कानून ने सभी को निराश किया । इस कानून की लोकमान्य तिलक ने यह कहकर आलोचना की, "यह स्वराज्य नहीं है और ना ही उसकी नींव ।" सभी भारतीय इस बात को समझ चुके थे कि यदि सरकार को झुकाना है तो आंदोलन को अधिक प्रखर बनाने की आवश्यकता है । भारत नये आंदोलन के लिए सिद्‌ध हुआ ।

स्वाध्याय

१. (अ) तिए गए तक्कलप से उतर्चा तक्कलप चनकर कथन पनः तर्लाि ।

(१) भारत सेवक समाज की स्थापना .... ने की ।
(अ) गणेश वासुदेव जोशी
(ब) भाऊ दाजी लाड
(क) म.गो.रानडे
(ड) गोपाल कृष्ण गोखले

(२) राष्ट्रीय कांग्रेस का प्रथम अधिवेशन .... में आयोजित किया गया ।
(अ) पुणे (ब) मुंबई
(क) कोलकाता (ड) लखनऊ

(३) 'गीतारहस्य' ग्रंथ .... ने लिखा ।
(अ) लोकमान्य तिलक (ब) दादाभाई नौरोजी
(क) लाला लजपतराय (ड) बिपिनचंद्र पाल

(ब) नाम तर्लाि ।

(१) नरम पंथी नेता ....
(२) गरम पंथी नेता ....

२. तन्म को कारणसतहर्ि स्म करो ।

(१) स्वतंत्रता युद्‌ध में भारतीयों की अस्मिता जागृत हुई ।
(२) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में दो गुट बन गए ।
(३) लॉर्ड कर्जन ने बंगाल का विभाजन करने का निर्णय किया ।

३. तट्मणी तर्लाि ।

(१) राष्ट्रीय कांग्रेस के उद्‌देश्य
(२) बंग भंग आंदोलन
(३) राष्ट्रीय कांग्रेस की चतु:सूत्री

४. भार्रािय राष्टीय कां स की तम को तन्म म के आधार पर स्म करो ।

- प्रशासनिक केंद्रीकरण
- आर्थिक शोषण
- पश्चिमी शिक्षा
- भारत के प्राचीन इतिहास का अध्ययन
- समाचारपत्रों का कार्य

राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रारंभिक समय के नेताओं के विषय में अधिक जानकारी अंतरजाल की सहायता से प्राप्त करो ।

9AUQRK